॥ ओ३म् ॥

स्तुति-प्रार्थना

—:०:—

ब्रह्मीभूत श्री १०८ श्रीस्वामी
परमानन्द जी महाराज
द्वारा उपदिष्ट

सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःख माप्नुयात्॥

प्रकाशकः—मा० रामानन्द
श्री भगवद्भक्ति आश्रम कुरुक्षेत्र (जींद)

मुद्रक—भूमानन्द ब्रह्मचारी 'भक्ति प्रेस', रेवाड़ी।

श्रीसद्गुरवे नमः

-: प्रार्थना :-

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ओं॥

ओं यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे। तत्तेजोऽस्माकं बुद्धीः श्रेयस्करेषु नियोजयेत्॥

हे तेजपुञ्ज, ज्योतिस्वरूप परमात्मन्! ज्ञान और आनन्द के देने के वाले, विजय कराने वाले, प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सबको उत्पन्न करने वाले! सबका संहार करने वाले! सबकी रक्षा करने वाले! सबको प्रेरणा

करने वाले ! अनन्त अपार आनन्द स्वरूप, ज्ञान स्वरूप परमात्मन् ! हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हम में प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं सो ही तुम हो। ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र और धर्मार्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करो। हम में तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे, सबको हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम, क्रोध इत्यादि और बाहर हमारी उन्नति में बाधक, विघ्नकारक शत्रु सब नष्ट हों, जिससे आनन्द पूर्वक हम आपको

प्राप्त हों। धन्यवाद पूर्वक हमारी आपको अनन्तवार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो एक मात्र आपही हमारे रक्षक हो।

॥ ओं शंकरोतु शंकरः ॥

॥ आरती ॥

ओ३म् निरञ्जनं दुःख भञ्जनं
ररंकार ओंकार।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही-
अलखं सर्वाधार॥
ओ३म् निरञ्जन ररंकार प्रभु,
सोऽहं सत्य नाम करतार॥
अच्युत गुरु गोविन्द दातार,

परमानन्द रूप निरधार ।

एक अखण्ड ज्ञान भण्डार,

तुमरी ज्योतिका उजियार ॥

मैं, मैं, मैं पन सर्वाधार,

नेति नेति कर वेद उचार ॥

राम आत्मा अपरम्पार,

शंकर ब्रह्म सर्वका सार ।

ओत प्रोत सबमें निरंकार,

जीवन प्राण आप ओंकार ॥

हरि नारायण अग्नि तार,

देव देव मैं करहुं पुकार ।

कृष्णानन्दाऽचलहं गौड़,

हूं फट अल्ला सर्व पसार ॥

विनवौं तुमको वारम्बार,

प्रीतम प्यार करो उद्धार ।

तद्वन गणपति नैनमस्कार,

होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार ॥

॥ गुरु महिमा ॥

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं,

ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपं ।

योगीन्द्रसेव्यं भवरोगवैद्यं,

श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि॥

परं पराख्यं परमं पवित्रं,

परेशमीशं सुरलोकनाथम् ।

सुरासुरैरर्चितपादपद्मं,

सनातनं लोकगुरुं नमामि ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

स्वराज्यसाम्राज्यविभूतिरेषा,
भवत्कृपा श्रीमहिमः प्रसादात् ।
प्राप्ता मया श्रीगुरवे महात्मने,
नमो नमस्तेऽस्तु पुनर्नमोस्तु ॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीः साक्षिभूतं ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप।
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योतिस्वरूप॥
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप।
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप॥
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप।
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप॥
ओं नमः शम्भवाय च मयो भवाय च।
नमः शंकराय च मयस्कराय च।
नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँ शान्तिः शान्ति रेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

गुरु वन्दना ।

श्री गुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सान्निध्य मात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥ १ ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ २ ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ३ ॥
यत्सत्वेन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन भाति यत् ।
यदानन्देन नन्दन्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ४ ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ ५ ॥
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥ ६ ॥

दो०—भाव पात्र में अर्पं कर सुन्दर जीवन फूल ।
सद्गुरु के अर्पण करो यही ज्ञान का मूल ॥

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय,
नमस्ते चिते सर्व लोकाश्रयाय ।।
नमोऽद्वैत तत्वायमुक्ति प्रदाय,
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ।।१।।
त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं,
त्वमेकं जगत्पालकं स्व प्रकाशम् ।
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ,
त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ।।२।।
भयानां भयं भीषणं भीषणानां,
गति प्राणिनां पावनं पावनानाम् ।
महोच्चैः पदानान्नियंतृ त्वमेकं,
परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ।।३।।
वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो,

वयं त्वां जगत्साक्षि रूपं नमामः ।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं,
भवाम्भोधि पोतं शरण्यं व्रजामः ॥४॥
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,
सहस्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे ।
सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते,
सहस्र कोटि युग धारिणे नमः ॥५॥
नमः कमल नाभाय, नमस्ते जल शायिने ।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तुते ॥६॥
वासनाद्वासुदेवस्य, वासितं भुवन त्रयम् ।
सर्व भूत निवासोऽसि, वासदेव नमोऽस्तुते ॥७॥
शंकरं शंकराचार्यं, केशवं बादरायणम् ।
सूत्र भाष्य कृतौ वन्दे, भगवन्तौ पुनः पुनः ॥८॥

ईश्वरो गुरुरात्मेति, मूर्ति भेद विभागिने ।
व्योमवद् व्याप्त देहाय, दक्षिणा मूर्तये नमः॥९॥
निधये सर्व विद्यानां, भिषजे भव रोगिणाम् ।
गुरवे सर्व लोकानां, दक्षिणा मूर्तये नमः ॥१०॥
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

* ॐ शान्ति शान्तिः शान्तिः *

॥ प्रार्थना ॥

परम पिता पूरण प्रभु, परमानन्द अपार ।
प्रेम रूप पावन परम, ईश्वर सर्वाधार ॥
दीन दयालु दयानिधे दाता परम उदार ।
सब देवन के देव हे, तुम जीवन हो पार ॥
शक्ति ज्ञान आनन्द के, हे पूरण भण्डार ।
सब को सुन्दर है हरे, सब सारों के सार ॥
हाथ जोड़ हो वन्दना, तुमको बारम्बार ।
भक्ति भाव से नम्र हों, मन में श्रद्धा धार ॥
तेरी ऐसी हो दया, हम में बढ़े मिलाप ।
संघ शक्ति का मान हो, मिटे फूट का पाप ॥
मीठी माला मेल की, फेरें हम दिन रात ।
जो जीवन से एक हों, तजें कलह की बात ॥
हम में आवे एकता, भ्रातृपन का भाव ।
दिन दिन बल शक्ति बढ़े, धरम करम में चाव ॥

आश्रम के उद्देश्य

१. श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना।

२. गोरक्षा और उनके लिये गोचर भूमि छुड़वाना।

३. जंगलों में वृक्ष लगवाना और उनके बीच में जलाशय बनवाना।

४. शिक्षा का प्रचार करना जिसमें मनुष्यमात्र विद्यालाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा को फिर से प्रचलित करना।

५. बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।

६. आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७. सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना।

८. राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना